भारत विभाजन की अंत:कथा

प्रियंवद

भारत विभाजन की अंत: कथा

प्रियंवद

भारत विभाजन की अंत:कथा

विभाजन भारत के इतिहास की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है। एक ऐसा देश, जिसकी सीमाएं मौर्य साम्राज्य से लेकर औरंगजेब तक लगभग एक सी रहीं, 1947 में धर्म के नाम पर बन्द कमरों में बैठकर, दो टुकड़ों में बांट दिया गया। एक बृहत सार्वभौम भारत की संभावना का अंत हो गया। यह क्यों हुआ? कौन थे इसके जिम्मेदार? या फिर इतिहास की वे कौन-सी ऐसी अंतर्धाराएं थीं जिन्होंने ऐसे प्रबल प्रवाह को जन्म दिया जिसे रोकने में सब असमर्थ थे? हिंदू और मुसलमान साथ क्यों नहीं रह गये सके? नहीं रह सकते थे क्या? तब देश का शीर्षस्थ नेतृत्व क्या कर रहा था? क्या भूमिका थी उसकी? कहाँ थे इस विभाजन के बीज? यह पुस्तक ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर तलाशती है। अनेक घटनाओं के जन्म, विकास, प्रभाव व परिणामों (1947) के दो सौ चालीस वर्षों तक फैले लम्बे कालखंड में उन समस्त कारकों का अध्ययन व विवेचन प्रस्तुत किया गया है जिन्होंने हिंदू और मुसलमानों के संबंधों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से गहराई तक प्रभावित किया। उनके बीच की खाई को निरंतर चौड़ा किया, उन्हें दो अलग-अलग दिशाओं में ढकेला और उनके बीच उस विघटन को निरंतर बढ़ाया जो अंतत: विभाजन के रूप में फलीभूत हुआ।

प्रियंवद की सम्मोहक भाषा, रोचक शैली और विवेचनात्मक अंतर्दृष्टि पाठकों के लिए नयी नहीं हैं। उनके उपन्यासों, लेखों और कहानियों से हिंदी जगत अच्छी तरह परिचित है। प्रियंवद की यह कृति उनके इतिहास-बोध, विवेचना की गहन अंतर्दृष्टि व जीवंत भाषा का प्रामाणिक दस्तावेज होने के साथ-साथ, हिंदी की एक बड़ी जरूरत को पूरा करती है।

भूमिका

एक स्वाभाविक प्रश्न यही उठता है कि विभाजन पर अब कोई पुस्तक क्यों? विभाजन अब न तो किसी की स्मृतियों में शेष है न पूर्वजों के उन छूटे हुए किस्सों में जो अकसर घरों के अँधेरे कोनों में खण्डित स्वप्नों के साथ भटकते रहते हैं। न वे लोग ही जीवित हैं, जिन्होंने इसे भोगा। तीनों देशों (भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश) की नयी पीढ़ी के लिए इतिहास की असंख्य सुखांत या दुखांत घटनाओं की तरह विभाजन भी अब विस्मृत कर देने वाली घटना बन चुका है। इन तीनों राष्ट्रों की भौगोलिक व अंतर्राष्ट्रीय स्थितियाँ इनकी आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक संरचना पूरी तरह स्वीकृत, स्वतंत्र और संप्रभु हो चुकी हैं। विभाजन पर असंख्य पुस्तकें भी लिखी जा चुकी हैं। फिर यह पुस्तक क्यों? वस्तुतः इसे लिखने के तीन प्रमुख उद्देश्य हैं।

पहला तो यह कि हिंदी भाषा के वृहद् जगत में भारत विभाजन पर कोई भी प्रामाणिक व तथ्यात्मक पुस्तक उपलब्ध नहीं है। इस विषय पर अंग्रेजी की चर्चित व महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का अनुवाद भी नहीं है। हिंदीभाषी व्यक्ति यदि विभाजन की घटना को संपूर्णता में जानना व समझना चाहे, तो उसके पास कोई विश्वसनीय स्रोत नहीं है। यदि वह समझना चाहे कि यह देश कैसे स्वतंत्र हुआ, कैसे इसके दो हिस्से हुए क्यों हिंदू व मुसलमान साथ नहीं रह सके, (आज भारत में लगभग 20 करोड़ मुसलमान साथ रह रहे हैं, जब पाकिस्तान बना तब लगभग 10 करोड़ थे) विभाजन के क्या परिणाम हुए कैसे अंग्रेज इस देश से गये, सत्ता हस्तांतरण कैसे हुआ क्या वैधानिक प्रक्रियाएँ थीं, विभाजन में किन व्यक्तियों की क्या भूमिका थी, समाज, राजनीतिक व आर्थिक जगत कैसे परिवर्तित हुए तो वह किसी पुस्तक के माध्यम से इसे समझने में असमर्थ है। यह एक दुर्भाग्यपूर्ण सत्य है कि हिंदी भाषा में मौलिक इतिहास लेखन के नाम पर एक बड़ा शून्य है। इस पुस्तक को लिखने का पहला उद्देश्य यही है कि अपनी समस्त सीमाओं और लघुता के बाद भी, एक ऐसा विनम्र प्रयास किया जाये जिसमें यह पूरा घटनाक्रम, इसके तथ्य व इनके विश्लेषण एक पुस्तक के रूप में हिंदी भाषा में उपलब्ध हो सकें जिससे कि देश के हिंदी भाषी क्षेत्र का विशाल हिंदू व मुसलमान समुदाय अपने अतीत की इस घटना के विभिन्न पक्षों व तथ्यों को जानने में सक्षम हो।

दूसरा उद्देश्य यह कि विभाजन के लगभग 60 वर्षों बाद विभाजन का पुनर्वलोकन किया जाये। गोइथे ने लिखा है, "समय-समय पर इतिहास दोबारा लिखा जाना चाहिए इसलिए नहीं कि नये सत्यों की खोज हुई है, बल्कि इसलिए कि दृष्टि में नये पक्ष आते हैं, इसलिए कि एक युग की प्रगति के प्रतिभागी नयी दृष्टियों से देखे जाते हैं और जिसके कारण अतीत पर नये तरीके से ध्यान व निर्णय दिया जा सकता है।" नदी में डूबकर हम जल को नहीं देख सकते। उसे संपूर्णता में देखने के लिए दूरी चाहिए। इतिहास लेखन में तटस्थता एक अनिवार्य तत्त्व है और यह तटस्थता घटनाओं से अलग और दूर होकर उसे देखने से आती है। हमारे पास विभाजन की जो उपलब्ध प्रामाणिक सामग्री थी, जो आधारभूत विश्लेषण थे, उससे जुड़े मुख्य पात्रों के वक्तव्य, पत्र, डायरी आदि थे, वे सब या तत्कालीन ही थे या तत्काल बाद के कुछ वर्षों के थे और इसलिए कहीं न कहीं अपनी समकालीनता और अपनी पक्षधरता के पूर्वाग्रहों के प्रभाव में थे। निष्पक्ष अवलोकन, तटस्थ, व्याख्याएँ अनासक्त दृष्टि और निर्भय विश्लेषण उनके लिए कठिन था। अब यह संभव भी है और सरल भी। 60 वर्षों का लंबा अंतराल हमें आज निर्लिप्त होकर दूर से देखने की यह सुविधा देता है। यदि उन समस्त घटनाओं का पुनःपाठ किया जाये, चरित्रों का पुनर्विश्लेषण किया जाये तो हम अब अधिक प्रासंगिक और पूर्वाग्रह रहित इतिहास के तथ्यों व निष्कर्षों को पा सकेंगे। जब उत्तर आधुनिकता यह स्थापित करती है कि विखण्डन और पाठ में सब निहित होता है, तो संभवत: इतिहास के लिए भी यही सत्य स्थापित होता है। इतिहास के मुख्य स्रोतों का चुनाव व उनका पुनःपाठ कैसे और किस तरह किया गया, यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है। यही पुनःपाठ साहित्य और इतिहास में निरंतर अनेकताओं को जन्म देता है जो इन विषयों को समृद्ध करती हैं, उन्हें निरंतर विस्तार देती हैं। यह पुस्तक विभाजन के इतिहास के पुन: पाठ का भी एक विनम्र प्रयास है।

तीसरा और आधारभूत उद्देश्य यह है कि तीनों देशों की नयी पीढ़ी (पूर्व उल्लिखित देश) आज भी, अपने कन्धों पर वैमनस्यपूर्ण, दुराग्रही, आरोपी और अत्यंत संकुचित व गैर जिम्मेदाराना ढंग से लिखे और पढ़ाये जा रहे अधिकांश इतिहास को ढो रही है! इतिहास के प्रति उदासीनता अथवा एकपक्षीय दृष्टि, इस घटना की अनेक भ्रामक धारणाओं को विश्वसनीय बना रही है। ये धारणाएँ तीनों देशों की नयी पीढ़ियों के अंदर स्कूली जीवन से ही, पारस्परिक अविश्वास, कटुता और कुछ हद तक घृणा मिश्रित असहिष्णुता को जन्म दे रही हैं। वास्तविकता

अनुक्रम

भूमिका	5
विषय प्रवेश	14
प्रथम अध्याय (1707 ई.- 1757 ई.)	
ढलान पर लुढ़कता मुगल साम्राज्य	45
द्वितीय अध्याय (1757 ई.-1857 ई.)	
अंग्रेज कंपनी की नीतियाँ और बढ़ती हिंदू-मुस्लिम खाई	58
स्थायी बन्दोबस्त	59
अंग्रेजी शिक्षा	74
अठारह सौ सत्तावन	103
तृतीय अध्याय (1857 ई.-1907 ई.)	
अलग होती दिशाएँ	146
ब्रिटिश साम्राज्य : एक अवलोकन	147
राष्ट्रवाद	174
हिंदू राष्ट्रवाद	189
मुस्लिम राष्ट्रवाद	210
भाषा	248
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुसलमान	283

बंगाल विभाजन 317

मुस्लिम लीग का जन्म 326

चतुर्थ अध्याय (1907 ई.-1930 ई.)

टूटते बनते पुल 349

पाँचवाँ अध्याय (1930 ई.-1940 ई.)

पाकिस्तान की तरफ तीन कदम 377

मुहम्मद इक़बाल 378

चौधरी रहमत अली 403

लाहौर प्रस्ताव 412

छठा अध्याय (1945 ई.-1947 ई.)

विभाजन 460

कैबिनेट मिशन प्लान व अंतरिम सरकार 461

लार्ड माउण्टबेटन 530

परिशिष्ट

(तीन मानचित्र) 603

हिंदी-अंग्रेजी शब्दावली 604

संदर्भ पुस्तकों की सूची 605